ROOTINDEXING
JOURNAL ABSTRACTING AND INDEXING SERVICE
INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in July 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

# जयशंकर प्रसाद के कथा साहित्य में भारतवर्ष का गौरवशाली परिदृश्य

पृथ्वी राज, अनुसन्धान विद्वान्, हिंदी विभाग, श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टीबड़ेवाला विश्विधलय, चूरू रोड, झुंझनू, राजस्थान।
डॉ कुलदीप गोपाल शर्मा, सह-आचार्या, हिंदी विभाग, श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टीबड़ेवाला विश्विधलय, चूरू रोड, झुंझनू, राजस्थान।

## शोध आलेख सारांश –

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के क्रमिक विकास के अनुशीलन के लिए हमें प्रसाद जी के नाटकों पर विचार करना आवश्यक है। प्रसाद जी उत्तर वैदिक काल के अन्तर्गत हरिश्चन्द्र के इतिहास की उस तह में गये हैं जहाँ मोह, पुत्र अधिकार को रहित और पुनः शेष के द्वारा, प्रस्तुत किया है। पुनः शेष और विश्वामित्र के संबंधों पर प्रकाश डाला गया है। महाभारत की घटना में भी इतिहास के साथ–साथ उस संस्कारित पृष्ठभूमि को प्रस्तुत किया है और भारतीय जातीय एकता भी युधिष्ठिर के द्वारा प्रकट हुई जिसमें उन्होंने कहा है कि दूसरों के संघर्ष के लिए हम 105 भाई हैं। 'जनमेजय के नागयज्ञ' में प्रसाद ने इस तथ्य को सामने लाने का प्रयास किया है। नाग एक जाति थी जो भारत में रहती थी। अभी तक तक्षक की जो संभावना थी वह सर्पजाति से थी।

**मूल शब्द** – जीवनदर्ष, परिदृश्य एवं दर्षन

## भूमिका –

प्रसाद के नाटकों में एक तरफ तो हम प्रत्येक नाटक के अंतर्गत एक क्रमिक विकास देखते हुए हैं जिसमें प्रसाद ने इतिहास के बहुत से अनछुए पक्ष को उद्घाटित किया है। इन नाटकों में ऐसी कोई भी घटना ऐसे नहीं जुड़ गई है कि जिसका कोई तारतम्य न हो। इस तथ्य का प्रकाशन करने के लिए उपर्युक्त सभी नाटकों पर विचार किया गया है। ऐतिहासिक विकास की एक दूसरी बात जो मुझे दिखाई देती है, वह यह कि प्रसाद जी ने उत्तर वैदिक काल से लेकर चौहान युगीन इतिहास को क्रमिक रूप से प्रस्तुत किया है। बात यह जरूर है कि उन्होंने इतिहास क्रम को व्यवस्थित नहीं लिखा है लेकिन जैसे–जैसे उनको सामग्री मिलती गई उन्होंने वैसे–वैसे अपने नाटकों का निर्माण किया। लेकिन अगर लेखन की तिथि को ध्यान न दिया जाय तो उनके नाटकों में एक क्रमिक इतिहास मिलता है जो उत्तर वैदिक काल से लेकर चौहान युग तक फैला हुआ हैं।

कल्पना जहाँ एक ओर साहित्य का अनिवार्य तत्त्व है वहीं दूसरी ओर ऐतिहासिक साहित्य सर्जनकर्ता के सामने इतिहास को सुरक्षित रखना सबसे बड़ी चुनौती होती है। साहित्यकार इतिहास के साथ मनमानी छेड़–छाड़ नहीं कर सकता क्योंकि इतिहास को सुरक्षित रखना साहित्यकार का धर्म है। अब प्रश्न उठता है कि साहित्य में इतिहास और कल्पना को किस रूप में प्रस्तुत किया जाय। यह पूरी तरह से साहित्यकार की कला पर निर्भर करता है। साहित्य की
जो दूसरी विशेषता है वह यह है कि वर्तमान का निर्माण और भविष्य की आशंका को यदि सीधे प्रस्तुत कर दिया जाय तो वह साहित्य नहीं बल्कि इतिहास हो जाता है। अब प्रश्न उठता है कि प्रसाद ने इतिहास को किस तरह से सुरक्षित रखा है।

प्रसाद एक कुशल रचनाकार हैं। जब हम प्रसाद को ऐतिहासिक दृष्टि से देखते हैं तो लगता है कि प्रसाद एक सफल इतिहासकार हैं और जब हम उन्हें साहित्यक दृष्टि से देखते हैं तो पाते हैं किस वे एक कुशल साहित्यकार हैं। इसका एक प्रमुख कारण यह है कि प्रसाद जी देश की समस्याओं की पृष्ठभूमि से अच्छी तरह वाकिफ थे। उन समस्याओं का आचार एवं संस्कार पर आधारित हल प्रस्तुत करना चाहते थे। इसलिए समस्यों को केन्द्र में रखकर इतिहास का चुनाव किया। जैसे जब उन्हें राष्ट्रीय जागरण की जरूरत समझ में आई तो उन्होंने चन्द्रगुप्त का चुनाव किया और जब नारी विशेषाधिकार की समस्या दिखाई दी तब उन्होंने ध्रुवस्वामिनी जैसे इतिहास का चुनाव किया। ऐसा करने से उनको इतिहास में ज्यादा कल्पना और फेर बदल की आवश्यकता नहीं पड़ी।

इतिहास को सुरक्षित रखने का जो प्रयास प्रसाद जी ने किया है उसका एक दूसरा कारण जो मेरी समझ में आता है वह यह कि उन्होंने इतिहास के अनछुए पहलुओं को उद्घाटित करने का प्रयास किया है। संभवतः इस अनछुए पहलुओं के उद्घाटन का सवाल प्रसाद के मन में चुनौती उत्पन्न किया हो, जिसके लिए उन्होंने बहुत से ऐतिहासिक ग्रन्थों को पढ़कर उसका उद्घाटन किया। इस कारण वह साहित्य के साथ इतिहास भी लिख रहे थे और इतिहास में साहित्य भी लिख रहे थे। इसको उन्होंने स्वतः स्वीकार भी किया है ''मेरी इच्छा भारतीय इतिहास के अप्रकाशित अंश में से उन प्रकाण्ड घटनाओं का दिग्दर्शन कराने की है उन्होनें हमारी वर्तमान स्थितियों को बनाने का बहुत प्रयत्न किया है। इन्होंने इस स्थिति को सदैव ध्यान में रखा है कि कहीं ऐतिहासिकता पर अघात न हो। गिरीश रस्तोगी ने प्रसाद की इस विशेषता को स्वीकार करते हुए लिखते हैं कि उनकी दृष्टि भारतीय अतीत के गौरवशाली


Scientific Indexing Services

ROOTINDEXING
JOURNAL ABSTRACTING AND INDEXING SERVICE
INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in July 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

शासन पृष्ठों को सामने लाने के साथ भारतीय जीवन दर्शन व स्थितियों की सतत् परम्पराशीलता को दिखाने में व्यक्त हुई है।

इतिहास को सुरक्षित रखने का जो तीसरा महत्वपूर्ण प्रयास हुआ है वह कलात्मक अभिव्यक्ति का है। अपनी कला के द्वारा प्रसाद जी ने पात्रों के द्वारा ऐसी अभिव्यक्ति कराई है कि पाठक उसे ऐतिहासिक समझता है लेकिन उसमें आधुनिक समस्याओं का बहुत सफल उद्‌घाटन भी हुआ है। 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक पर अगर ध्यान दिया जाय तो प्रसाद की कलात्मकता का पता चलता है। प्रसाद जी ध्रुवस्वामिनी के पुनर्विवाह की समस्या को इतने ऐतिहासिक प्रमाणों के बीच प्रस्तुत किया कि इतिहास की प्रमाणिकता भी सिद्ध होती है और आधुनिक समस्या से भी हम रूबरू होते हैं।

ऐतिहासिकता को सुरक्षित रखने के प्रयासों में एक और जो प्रमुख तत्व समझ में आता है, वह यह है कि वे अतीत की गरिमा को सुरक्षित रखना चाहते थे। उनका सिद्धान्त था कि प्राचीन गरिमा से आत्म बल मिलता है। राष्ट्र के लोगों ने अपना आत्म बल खो दिया था। उनका विश्वास था कि अंग्रेज अब यहाँ से जा ही नहीं सकते ऐसे समय में एक साहित्यकार का उत्तरदायित्व होता है कि वह समाज की रक्षा करे। इसलिए प्रसाद जी देश के गरिमामयी अतीत को प्रस्तुत करना चाहते थे क्योंकि भारत एक ऐसा देश है जिसका एक समृद्धशाली अतीत है। कुछ लोग प्रसाद पर गड़े मुर्दे उखाड़ने का आरोप लगाते हैं। यह उनकी स्थूल सोच है। प्रसाद जैसे सजग रचनाकार मुश्किल से मिलते हैं। इस संदर्भ में इतिहाकास कृष्णचन्द्र लाल का कथन है कि जयशंकर प्रसाद हिन्दी के अकेले ऐसे ऐतिहासिक नाटककार हैं जिन्होंने भारतीय अतीत के गौरवशाली पृष्ठों को अनुसंधान पूर्ण ऐतिहासिक विवेक के साथ न केवल चित्रित किया बल्कि अपने समय के तमाम, राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक प्रश्नों और समस्याओं को इस ढंग से उकेरा है कि जिससे उसमें ऐतिहासिक पक्ष सुरक्षित रह सके।

जयशंकर प्रसाद ने हिन्दी कहानी भण्डार की वृद्धि में अपूर्व योगदान दिया। उन्होंने लगभग पांच दर्जन कहानियां लिखीं। जिनमें विषय की विविधता के साथ–साथ कला का चरम उत्कर्ष व्यंजित है। प्रसाद की कहानियों का भाव–जगत प्रेम है। वे कवि थे। उनका कवि–हृदय इन कहानियों से झाँक रहा है। नाटक में ही नहीं अपितु कहानी में भी इन्होंने प्राचीन संस्कृति के स्वर्णिम पृष्ठों को प्रकाशित किया।

जयशंकर प्रसाद पहले लेखक हैं जिन्होंने अपनी कहानी द्वारा हिन्दी कहानी के ढर्रे को पूर्णतया बदला। उन्हें इस कार्य में अपने सहयात्री प्रेमचन्द का भी अपूर्व सहयोग मिला। दोनों के क्षेत्र अलग थे। दोनों ने कहानी कला को नया मोड़ दिया, और उसे नया कलेवर प्रदान किया। इन दोनों की प्रारंभिक रचनाएँ पुरानी कहानी के प्रभाव से अछूती नहीं है। पुरानी कहानी का प्रमुख तत्व संयोग इनमें विद्यमान है। प्रसाद की कहानी 'ग्राम' का नायक संयोगवशात् ही रास्ता भटककर भूतपूर्व कुसुमपुर जागीरदार की विधवा के यहां पहुंच जाता है और उसे यह ज्ञात होता है कि उनकी दीन–हीन दशा का कारण उसका अर्थलोलुप पिता है। किन्तु धीरे–धीरे प्रसाद की कहानी कला निखरती जाती है और अंत में चलकर 'आकाशदीप', 'घीसू', 'बेड़ी', 'मधुआ', 'दासी', 'पुरस्कार' और 'गुण्डा' जैसी विषय और कला की दृष्टि से सशक्त–कहानियों की सर्जना करते हैं।

विवेचन की सुविधा के लिए प्रसाद की कहानियों को दो वर्गों में (1) प्रयोग युग और (2) प्रौढ़युग में विभक्त कर लेना अधिक उपयुक्त होगा।

वैसे तो प्रसाद की कहानियों में प्रयोग और प्रौढ़ युग के मध्य का वह बिंदु खोज पाना बड़ा कठिन है जहाँ से दोनों अलग खड़ी दिखाई दें। फिर भी 1926 ई. तक की कहानियों को प्रयोगकालीन कहानी साहित्य में स्थान दिया जा सकता है। इस काल तक की कहानियाँ 'छाया' और 'प्रतिध्वनि' नामक संग्रहों में संकलित है। इन दोनों संग्रहों में संकलित कहानियों की संख्या 26 है। 'छाया' का प्रथम संस्करण सन् 1912 और द्वितीय संस्करण सन् 1918 में तथा 'प्रतिध्वनि' संग्रह सन् 1926 में प्रकाश में आया। 'छाया' में संग्रहीत कहानियाँ कला की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण स्थान की अधिकारिणी नहीं हैं पर इन दोनों संस्करणों का हिन्दी कहानी साहित्य में ऐतिहासिक महत्व है जिन्हें विस्मत नहीं किया जा सकता। इनमें कहानी कला के बीज अंकुरित होते दिखाई पड़ते हैं जो आगे चल कर पुष्पित–पल्लवित हुए हैं। 'ग्राम' केवल प्रसाद ही की ही नहीं अपितु हिन्दी की भी पहली कहानी है जिसमें लेखक ने सामाजिक क्षेत्र में प्रवेश किया और उसकी तत्कालीन एक ज्वलंत समस्या कर्ज के दुष्परिणाम तथा महाजनों दुर्व्यवहार के चित्रित करने का प्रयास किया गया है। 'ग्राम' वह खाका है जिसमें वे सभी रेखाएँ उभरी हैं जिन पर आगे चलकर प्रसाद जी की कहानी कला का आलीशान महल खड़ा होता है। इसका कथानक बड़ा साधारण–सा है। बाबू मोहनलाल अपनी जमींदारी के निरीक्षण हेतु कुसुमपुर जा रहे हैं। मार्ग अपरिचित है। वर्षा भी प्रारंभ हो जाती है। वे मार्ग भूल जाते हैं। ठौर के लिए, राज बिताने की गरज से वे एक दुखिया स्त्री के घर पहुंचते हैं। संयोग से स्त्री अपनी दुरावस्था की गाथा सुनाती है,


Scientific Indexing Services

जिससे उनको मालूम होता है कि दुखिया का दिवंगत पति कुसुमपुर का जमींदार था और मोहन लाल के पिता ने छल से इलाके पर आधिपत्य जमा लिया।

इतने साधारण से कथानक को लेकर लेखक प्राकृतिक दृश्यावली के परिपार्श्व में पात्रों एवं विविध स्थितियों का ऐसा भाव–पूर्ण और काव्यात्मक चित्रण करता है कि कथा में सजीवता आ जाती है। कहानी का अंत भी मार्मिक है। प्रसाद का अतीत प्रेम यहां भी प्रच्छन्न रूप से विद्यमान है। 'ग्राम' स्वरूप और संवेदन की दृष्टि से आजकल की प्रभाववादी कहानियों के निकट खड़ी दिखाई जाती देती है। लेखक ने ग्राम जीवन के विविध खण्ड चित्र उपस्थित कर एक प्रभावशाली वातावरण निर्माण करने की चेष्टा की है। इस प्रभाव को और अधिक तीव्र बनाने के लिए नगर के संकुल जीवन के प्रतीक स्वरूप स्टेशन का भी खण्डचित्र प्रसाद ने दिया है। यद्यपि इस कहानी पर बंगला कहानी के रचना शिल्प का स्पष्ट प्रभाव मिलता है पर कहानीकार प्रसाद की मूलभूत विशेषताएँ सजीव वातावरण निर्माण, रसात्मक वर्णन, और रोमानी प्रवृत्ति आदि इस प्रथम रचना में ही प्रत्यक्ष हो जाती है। उन्होंने नई कहानी और पुरानी आख्यायिका के समन्वय की जो नई कला प्रदर्शित की वह आगे विकसित होकर हिन्दी कहानी की अमूल्य निधि सिद्ध हुई।

प्रसाद सौंदर्य और प्रेम के भावुक गायक थे। ये दोनों प्रधान तत्व 'छाया' के प्रथम संस्करण की पाँचो कहानियों में प्रत्यक्ष हुए हैं। 'ग्राम' को छोड़कर बाकी चारों कहानियों का मूलबिन्दु प्रेम है। इन कहानियों में प्रेम का आलोक प्राकृतिक परिवेश के बीच से उद्भासित हुआ है। 'चंदा' कहानी का आरंभ चंदा और हीरा की प्रणय क्रीड़ा से होता है और रामू द्वारा हीरा से तथा चंदा द्वारा रामू से लिए गए भयंकर प्रतिशोध से इसकी समाप्ति होती है। काल जीवन से संबंधित प्राकृतिक और प्रणय–व्यापारों से समावेष्टित इस भावपूर्ण गाथा में लेखक का स्वच्छन्दतावादी दृष्टिकोण अधिक मुखर हो सका है। 'रसिया बालम' का प्रसंग शीरी और फरहाद के प्रेम का यत्किंचित आभास दे जाता है। पर प्रसाद जी ने ऐसे कौशल से कथातत्व को संग्रथित किया है कि कहानी अपनी रमणीयता में नवीनता का भी आभास दे जाती है। इसमें प्रकृति और मानव दोनों को एक सूत्र में ग्रन्थित कर अत्यन्त कलात्मक पद्धति से लेखक ने राजकुमारी के प्रेम का उत्कर्ष उपस्थित किया है। प्रिय के उच्छिष्ट विष का पान करके वह प्रेम की वेदी पर अपने को उत्सर्ग कर देती है। 'मदन मृणालिनी' में प्रेम का दूसरा स्वरूप अभिव्यक्त हुआ है। पहली बार अधिक सफलतापूर्वक लेखक इस कहानी में मानव–मन के भीतर उठने वाले अंतर्द्वन्द्व को रूपायित कर सका है। मदन अपनी प्रियतमा के लिए धर्म तक त्यागने का संकल्प करता है पर समाज के भय से वह विरत हो जाता है। वह प्रेम को आत्म–त्याग समझता है और अंत में अपनी प्रणयिनी को सर्वस्व समर्पित कर उसी भिखारी रूप में, जिस रूप में वह मृणालिनी के घर गया था, स्वदेश लौट पड़ता है। प्रसाद ने इस कहानी द्वारा समुद्र पार करने वाले उन भारतीयों की समस्या का भी संकेत किया है जिन्हें धर्मयुक्त मान लिया जाता था और जिनकी संतानों की शादी –ब्याह एक समस्या बन कर रहती जाती थी। मदन प्रेम के क्षेत्र से उसी तरह पलायित होता है जिस तरह 'स्कन्दगुप्त' का नायक 'स्कन्दगुप्त'। प्रसाद के इसी प्रेम का उत्कर्ष रूप उनकी प्रौढ़ कृतियों में उपलब्ध होता है।

इस प्रकार इन प्रारंभिक कहानियों में प्रसाद की सभी प्रमुख विशेषताएँ सौंदर्यानुभूति की काव्यात्मक व्यंजना, विषय अनुरूप प्राकृतिक वातावरण निर्माण, स्वच्छन्दतावादी दृष्टि, अतीत के प्रति अनुराग एवं भाव–प्रवण चिंतनशीलता आदि सब किसी–न–किसी रूप में विद्यमान हैं। चरित्र चित्रण की दृष्टि से निश्चय ही प्रसाद यहाँ बहुत अधिक सफल नहीं हैं जितना कि 'आकाशदीप' 'आंधी', और 'इन्द्रजाल' में 'छाया' के सभी पात्र अर्द्ध विकसित ही नजर आते हैं। किन्तु लेखक का ध्यान पात्रों के बाह्य जगत के अपेक्षा उनके आभ्यंतर जीवन के द्वन्द्वों की ओर ही अधिक है। 'चन्द' के चंदा में आकाशदीप की चम्पा का ही अंतर्द्वन्द्व है, भले ही उसकी उतनी कलात्मक परिणति यहाँ न हो पाई हो।

## सारांश –

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जयशंकर प्रसाद जी ने अपने उपन्यास 'ककाल', 'तितली' और 'इरावती' में न केवल ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को उद्घाटित किया है बल्कि इन उपन्यासों के माध्यम से जीवन में आने वाले संघर्षों के बीच सफलता के उन मूल तत्वों को भी रूपायित किया है, जिसके आलोक में मानव इस कर्मक्षेत्र में अपने जीवन को साकार बना सकता है। प्रसाद जी के उपन्यासों को मानव जीवन संघर्ष की संजीवनी कहा जाय तो कहीं से अतिशयोक्ति नहीं होगी।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सज्जन, जयशंकर प्रसाद, (संपा.) सत्यप्रकाश मिश्र, प्रसाद ग्रंथावली, खण्ड–1, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2010

2. प्रायश्चित, जयशंकर प्रसाद, (संपा.) सत्यप्रकाश मिश्र, प्रसाद ग्रंथावली, खण्ड–1, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2010
3. कल्याणी परिणय, जयशंकर प्रसाद, (संपा.) सत्यप्रकाश मिश्र, प्रसाद ग्रंथावली, खण्ड–1, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2010
4. करुणालय, जयशंकर प्रसाद, (संपा.) सत्यप्रकाश मिश्र, प्रसाद ग्रंथावली, खण्ड–1, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2010
5. उपाध्याय, वासुदेव, गुप्त अभिलेख, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना, प्रथम संस्करण 1974 ई.
6. ओझा दशरथ, हिंदी नाटक उद्‌भव ओर विकास, (संपा.), राजपाल एंड सन्स, दिल्ली, संस्करण 2014 ई.
7. कटोर, शिवशंकर, गीति नाट्य शिल्प और विवेचन, प्रगति प्रकाशन, आगरा, प्रथम संस्करण 1979 ई.
8. कथूरिया सुन्दरलाल, आधुनिक हिंदी नाटक संवेदना और रंग शिल्प के नये आयाम, (संपा.), भावना प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 1998 ई.
9. कुमार सिद्धनाथ, प्रसाद के नाटकों का पुनर्मूल्यांकन, दि मैकमिलन कम्पनी ऑफ इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली, संस्करण 1978 ई.
10. गुप्त, रामकुमार, हिंदी नाटक के प्रमुख हस्ताक्षर, आगरा प्रकाशन, मथुरा, प्रथम संस्करण 1980 ई.